ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

श्रीमती सरला देवी, सहायक आचार्य , डिपार्टमेंट ऑफ़ लॉ , श्री खुशाल दास यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़

शोध सार

विश्व के अधिकांश भाग तेजी से एक दूसरे से जुड़ने जा रहे हैं ।यद्यपि देश के बीच परिस्थित जुड़ाव के अनेक आयाम है जैसे सांस्कृतिक राजनीतिक और आर्थिक ।लेकिन हम अत्यंत सीमित अर्थ में वैश्वीकरण की चर्चा करेंगे ।इसमें वैश्वीकरण को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश के माध्यम से देश के बीच एकीकरण के रूप में परिभाषित किया गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं इसके प्रभावों को समझने में उत्पादन का एकीकरण और बाजार का एकीकरण एक महत्वपूर्ण धारणा है ।वैश्वीकरण को अनेक कारकों में सुगमिता प्रदान की है ।इनमें से तीन कारकों पर बोल दिया गया है। प्रौद्योगिकी में तीन प्रोन्नति व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण और टो जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों का दबाव विकास प्रक्रिया में भी वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।पिछले देश के विकास का वैश्वीकरण ही विकल्प बच्चा जिसमें विकास के लिए बाजारों की व्यवस्था को अपनाया ।विश्व के अधिकांश देशों ने स्वतंत्र अर्थव्यवस्था को छोड़कर निजीकरण उदारीकरण वैश्वीकरण से प्रेरित बाजार उन्मुख अर्थव्यवस्था को अपना लिया।

वैश्वीकरण से आशय

वैश्वीकरण का अर्थ अंतरराष्ट्रीय एकीकरण विश्व व्यापार का खुलना उन्नत संचार साधनों का विकास वित्तीय बाजारों का अंतरराष्ट्रीय कारण बहुराष्ट्रीय कंपनी का महत्व बढ़ता जनसंख्या का देशांतर गण व्यक्तियों वस्तुओं और पूंजी आंकड़ों में विचारों की गतिशीलता का बढ़ना वैश्वीकरण ने राष्ट्रीय राज्य का स्वरूप ही बदल दिया है ।राजनीतिक शक्ति का अधोगामी संचार इसका सकारात्मक प्रभाव है ।वैश्वीकरण के प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्तरदाई साबित है ।टेलीग्राफ टेलीफोन और माइक्रोचिप इंटरनेट के नवीन आविष्कारों ने पूरी दुनिया में संचार क्रांति का सूत्रपात किया है ।उन्नत प्रौद्योगिकी के कारण विचार पूंजी वस्तु और लोगों की विश्व के विभिन्न भागों में आवाजाही बढ़ गई इसका प्रभाव पूरी दुनिया में देखने को मिला ।

वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभाव

वैश्वीकरण के प्रभाव प्रत्येक चित्र पर दिखाई देते हैं ।लेकिन राष्ट्रीय राज्यों पर सर्वाधिक प्रभाव रहा ।बेसिक स्तर पर पारिस्थितिक बदलाव एकीकृत अर्थव्यवस्था अन्य प्रभावकारी प्रवृत्तियों के कारण संपूर्ण विश्व का राजनीतिक पर्यावरण वैश्वीकरण के प्रभाव में आ गया विकसित देशों में कल्याणकारी राज्य की धारणा पुरानी पड़ने लगी और उसकी जगह न्यूनतम हस्तक्षेप राज्य ने ले ली है। अब राज्य लोक कल्याणकारी राज्य होने के साथ ही आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक तत्व बन गया है ।विश्व शताब्दी के उत्तरार्ध में अंतरराष्ट्रीय संबंधों तथा विश्व राजनीति पर अन्य वैश्विक तत्वों का प्रभाव रहा। शीत युद्ध वैचारिक संघर्ष था ।1950 तथा 1960 के दशकों में जब शीत युद्ध अपने तूफान पर था ।उसे समय एशिया तथा अफ्रीका में उपनिवेशवाद का अंत हो रहा था और नए राष्ट्रीय राज्यों का उदय हो रहा था। शीत युद्ध के तनाव के कारण ही कोरिया, वियतनाम, कांगो ,अंगोला, मौजांबिक तथा सोमालिया में की बात क्षेत्रीय संघर्ष उत्पन्न हुई।

वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव

पश्चिमी पूंजीवादी देश एशिया और अफ्रीका में अपने उत्पादन के लिए बाजार ढूंढने में प्रयाश्रित है। प्रत्येक देश ने अपना बाजार विदेशी वस्तुओं की बिक्री के लिए खोल दिया है ।अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोर्स और विश्व व्यापार संगठन दुनिया में आर्थिक नीतियों के निर्धारण में प्रत्यक्ष व प्रमुख सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं ।यह संस्थाएं शक्तिशाली पूंजीवादी टताकतों के प्रभाव के क्षेत्र में कार्य कर रही है।

वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव

वैश्वीकरण का विश्व के देशों की स्थानीय संस्तुतियों पर मिश्रित प्रभाव पड़ा है ।वैश्वीकरण निर्णय केवल राजनीति को आर्थिक क्षेत्र को प्रभावित किया है ।अपितु इसका लोगों के जीवन सांस्कृतिक प्रभाव विशेष रूप से पड़ा है ।वैश्वीकरण संस्कृत एकरूपता का जन्म देता है ।जिसका विशिष्ट दिशा संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

संस्कृत समरूपता के नाम पर पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों को अन्य आंतरिक संस्तुतियों पर लादा जा रहा है ।इसे खान-पान रहन-सहन में जीवन शैली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण का सकारात्मक पक्ष भी है। कि प्रौद्योगिकी के विकास में प्रभाव से एक नवीन विषय संस्कृत के उदय की प्रबल संभावनाएं बन गई । इंटरनेट ,सोशल मीडिया , फैक्स,उपग्रह तथा केबल टीवी ने विभिन्न राष्ट्रों के मध्य विद्यमान संस्कृत बढ़ाओ को हटाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शब्दार्थ

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोश, लोक कल्याणकारीराज्य, उपनिवेशवाद, बहुराष्ट्रीयकंपनियां, विश्व व्यापारसंगठन, संयुक्त राष्ट्रसंघ, विश्व बैंक, पूर्वीयूरोपीय संघ, राजनीतिक समुदाय ।

संस्कृत प्रवाह को बढ़ाने वाले विभिन्न माध्यम

वैश्वीकरण का प्रभाव सांस्कृतिक प्रभाव को बढ़ाने वाली विभिन्न माध्यमों सूचना सेवाएं,समाचार सेवाएं इसके तहत देख सकते हैं ।

सूचनात्मक सेवाएं में समाचार सेवाएं

इंटरनेट में ईमेल से सूचनाओं को आदान-प्रदान होता है। इलेक्ट्रॉनिक क्रांति ने सूचनाओं को जनतांत्रिक बना दिया है। विचारों में धारणाओं का धन-प्रदान आसन बनाना सूचना तकनीकी के विस्तार से डिजिटल क्रांति आई है। वही भी समझेगी दरार भी उत्पन्न हुई है ।विकसित अर्ध विकसित हुए कुछ विकासशील देशों में सूचना सेवाओं पर राज्य का नियंत्रण है। एक विशिष्ट सुबह द्वारा सूचना माध्यम पर आधिपत्य स्थापित कर लेना एलोकतांत्रिक है ।

बीसीसी, सी एन एन, अल जजीरा आदि सिंह का अंतरराष्ट्रीय चैनलों का विश्व व्यापार प्रसारण हो रहा है। जिसमें वैश्वीकरण को अधिक प्रभावशाली बना दिया है। खबरें भयंकर विश्लेषण राजनीतिक प्रभाव से संबंधित होता है। जो लोकतंत्र के लिए उपयुक्त नहीं है ।

भारत पर वैश्वीकरण के प्रभाव

मिश्रित अर्थव्यवस्था में विश्वास करने वाला भारत देश में वैश्वीकरण की धारा से जुड़ गया है। भारत में वैश्वीकरण का सूत्र 5 जुलाई 1991 में हुआ ।तत्कालीन प्रधानमंत्री **नरसिम्हा राव** ने किया व्यवहार में उसे समय की वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने ही नई आर्थिक नीतियों उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण एलजी को शुरू किया। 1991 में नई आर्थिक नीति अपना कर भारत वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की प्रक्रिया से जुड़ गया। 1992 93 से रुपए को पूर्ण परिवर्तनीय बनाया गया पूंजी बाजार और वित्तीय सुधारो के लिए कदम उठाएंगे ।आयात निर्यात नीति को सुधर गया है इसमें प्रतिबंधों को हटाया गया है **।30 दिसंबर 1994** को भारत ने एक अंतरराष्ट्रीय समझौता वाली दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए **1 जनवरी** 1995 को विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई और भारत इस पर हस्ताक्षर करने के बाद इसका सदस्य बन गया प्रशासनिक व्यवस्था में अनेक सुधार किए गए और सरकारी तंत्र की जटिलताओं को हल्का किया गया इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय संघवाद की तीन अलग-अलग प्रतिक्रिया सामने आई है। **पहला** यह आशंका है कि वैश्वीकरण के कारण अर्थव्यवस्था की दिल से आर्थिक विकास पर विषम प्रभाव पड़ा है ।क्योंकि भारत अभी भी एक विकासशील देश है।

दूसरा वैश्वीकरण की प्रवृत्ति वैधता का संकट पैदा करती है। एक तरफ राष्ट्रीय राज्य अपने आर्थिक संप्रभुता का काम कर देता है। किंतु आंतरिक संप्रभुता का प्रत्यय करने से परहेज करता है ।भारतीय संघवाद की **तीसरी परत** पंचायती राज की तीसरी चुनौती है। संवैधानिक मान्यता इसी चिंता का एक प्रतिबिंब है। इस परवर्ती का नवीन स्थानीयता **"न्यू लोकेलिज्म थिंक ग्लोबली एक्ट लोकेलली"** की संज्ञा दी जाती है ।

इसी वैश्वीकरण के कारण हिमाचल प्रदेश के से गुजरात और महाराष्ट्र के सेंटर उत्तरी पूर्वी राज्यों तक पहुंचाते हैं परंतु यही जब दो या दो से अधिक संप्रभु राष्ट्रीय राज्यों के मध्य मुक्त रूप से होता है ।

वैश्वीकरण के परिणाम

वैश्वीकरण में वैश्विक संस्कृति के साथ एक बेसिक व्यवस्था को जन्म दिया है। वैश्वीकरण ने यूरोप में अन्य राज्य में शरणार्थी समस्या को जन्म दिया है। 2016 तक 7.4 अरब जनसंख्या में से लगभग 60 करोड लोग शरणार्थी है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

आधार कार्ड 122 वान व्यक्ति शरणार्थी है कुछ आलोचक यह भी मानते हैं कि वैश्वीकरण केवल कॉरपोरेट सेक्टर में उद्योगपतियों के हितों का संवर्धन करता है और इसका गरीब वर्ग के हितों से कोई सरकार नहीं है।

उपलब्धियां

विगत 25 वर्षों में के पिछले देश की प्रगति व लोगों के जीवन को कुछ हल बनाने में वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।विकासशील देशों के लोगों के जीवन प्रत्याशा का दोगुना होना शिशु मृत्यु दर का घटना बेशक मताधिकार का व्यापक विस्तार लोगों के जीवन को अधिक कुशल बनाना है।स्वच्छ जल उपलब्ध कराना ,बाल श्रम को घटना, लोगों के भोजन में पौष्टिकता को बढ़ाना, प्रति व्यक्ति को विद्युत , कार,रेडियो, टेलीविजन ,टेलीफोन ,मोबाइल फोन आदि सुविधाएं उपलब्ध कराना।

संदर्भ ग्रंथ

Globalization and its this contents 2001
नोबेल पुरस्कार विजेता जोसेफ ई. स्टिगलिट्ज द्वारा 2002 में प्रकाशित पुस्तक है।
जगदीश भगवती " in defence of globalisation"
दानी रोडरिक "वैश्वीकरण विरोधाभास"
जैफ्री ए friden "वैश्विक पूंजीवाद "
गिड्डेंस एंथोनी रनवे वर्ल्ड "हाउ ग्लोबलाइजेशन इन रिसेप्शन और लीव्स लंदन प्रोफाइल्स"
थॉमसन जी. "इकोनामिक ग्लोबलाइजेशन"

सारांश/शोध सार

वैश्वीकरण एक जटिल और बहु आयामी अवधारणा है।जिसमें राजनीति ,सामाजिक ,अर्थव्यवस्था ,संस्कृति और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र शामिल है।भौतिकवादी दृष्टिकोण का मानना है कि वैश्वीकरण के पीछे सामान्य या बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पूंजीगत मुख्य है।वहीं दूसरी और वैश्वीकरण सोच और विचारों सूचना और ज्ञान में बदलाव का परिणाम है।भर्ती हुई अर्थव्यवस्थाओं का मानना है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकरण एक ऐतिहासिक प्रवृत्ति है।